धारावाहिक संख्या - 20 (आने वाला कल)

"क्षितिज के उस पार"

स्क्रिप्ट - Dr Manas Pratim Das

अवधारणा और समन्यवय : Dr. B. K. Tyagi

हिंदी अनुवाद - Shriniwas Oli

पात्र परिचय -

चेतन - (अंतरिक्ष यात्री / 30 वर्ष)

स्पंदन - (रोबोट / रोबोटिक आवाज़)

मंदिरा - (युवा अंतरिक्ष यात्री / 35 वर्ष)

गगन - (कंट्रोल रूम में वैज्ञानिक / अधेड़)

रजनी, प्रिया व सीमा - तीन युवतियां (30 वर्ष)

----------Opening Music / Scene One----------

(तीस वर्षीय अंतरिक्ष यात्री चेतन और सहयात्री मंदिरा, अभी मंगल ग्रह पर मौजूद हैं / मंदिरा उम्र में चेतन से कुछ बड़ी है / ये दोनों स्पंदन नाम के एक रोबोटिक अंतरिक्ष यान के भीतर हैं / स्पन्दन सिर्फ पॉलीमर और धातु का कोई ढांचा ही नहीं है बल्कि वो इन दोनों अंतरिक्ष यात्रियों से बखूबी बातचीत भी कर सकता है / अभी मंदिरा किसी खास काम से यान से बाहर निकली हुई है)

चेतन : (चौंकते हुए) कहीं तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया ? क्या मामला है ?

स्पंदन : (जोर से हंसते हुए) हा... हा.... ये क्या अजीब सी बात कह दी आपने ?

चेतन : अजीब सी बात .... मतलब ?

स्पंदन : मतलब ये कि तुम अक्सर बात-बात में मेरे दिमाग का जिक्र कर देते हो।

चेतन : तो इसमें कौन सी अजीब बात हुई ? ये तो सबको ही मालूम है कि तुम जैसे स्पेसक्राफ्ट के दिमाग को भी एक और दिमाग की जरूरत है।

स्पंदन : जरा जबान संभाल कर बात करो चेतन ! मुझे स्पेसक्राफ्ट कहने की हिम्मत कैसे हुई तुम्हारी ? मशीनी ढांचों से मेरी तुलना कर रहे हो तुम ! सोच-समझ कर बोल रहे हो ना तुम ?

चेतन : अरे...मुझे तो कुछ समझ में नहीं आया...।

स्पंदन : तो समझ में आना चाहिए। तुम्हारे बॉस की नजरों में भी मैं एफ.ई.पी. (FPE) यानी फ्लूड सायकोसोमेटिक एन्सेंबल (Fluid Psychosomatic ensemble) हूं। और उन्होंने मुझे एक प्यारा सा नाम दिया है - स्पंदन। इतना खूबसूरत नाम तो तुमसे बोला नहीं जा रहा, उल्टा मुझे स्पेसक्राफ्ट कह रहे हो।

चेतन : ठीक है.. ठीक है...। मैंने अपनी गलती मान ली स्पंदन। लेकिन आजकल बार-बार प्यार और प्यारा शब्द का इस्तेमाल तुम्हें कुछ ज्यादा ही पसंद आ रहा है। क्या बात है ?

स्पंदन : क्यों ? क्या मैं किसी से प्यार नहीं कर सकता ?

चेतन : देखो स्पंदन, पिछली रात लगातार काम की वजह से मैं तो काफी थका हुआ हूं। मैं अभी...।

स्पंदन : तुम फिर से अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर रहे हो !

चेतन : देखो, हम यहां एक खास मिशन पर हैं। जितना जल्दी हो सके, हमें दो नई कालोनियां बना लेनी हैं। हमारी धरती के लोग यहां पहुंचने के लिए तैयार हैं।

स्पंदन : गजब... अपने काम की कितनी फिक्र है तुम्हें ! एक बात बताओ, अगर तुम्हारी पत्नी तुम्हें शिलांग से अचानक फोन करेगी तो क्या तुम फोन नहीं उठाओगे ?

चेतन : शिलांग से ? एक घंटा पहले ही तो वो दिल्ली में थी।

स्पंदन : घबरा गये ना ? यही तो है प्यार...। दरअसल अचानक ही दिल्ली का मौसम काफी ज्यादा खराब हो गया था। हमें क्लाइमेट जेटसेट की मदद से हजारों लोगों को शिलांग ले जाना पड़ा।

चेतन : अच्छा ! मुझे तो किसी ने बताया भी नहीं। कितनी अजीब बात है..।

स्पंदन : जरा रुको एक मिनट...। मंदिरा कॉल कर रही है। अपने सामने वाला वो नीला बटन दबाओ।

चेतन : ठीक है (स्विच दबाने की आवाज़) दबा दिया। हेलो मंदिरा, सब कुछ ठीक तो है ना ?

मंदिरा : (स्पीकर पर आती आवाज़) नहीं चेतन, कुछ गड़बड़ है, तभी कॉल कर रही हूं। मैं यहां पत्थरों के ढेर के सामने खड़ी हूं और... ज्यादातर पत्थरों में से कुछ अजीब सी चमकीली भाप जैसी कोई चीज निकल रही है।

चेतन : अजीब सी चीज मतलब... ? कोई खतरा तो नहीं लग रहा है तुम्हें ?

मंदिरा : खतरे का तो मैं कुछ नहीं कह सकती, लेकिन...।

स्पंदन : मंदिरा, तुम्हारी कमर के पास जो पीला रिबन लटक रहा है, उसे खींचो... जोर से खींचो... जल्दी से।

मंदिरा : (हैरानी भरे स्वर में) पीला रिबन...हां हां... दिख गया... खींचती हूं.... ये खींच दिया।

स्पंदन : अब तुम्हें क्या दिख रहा है ?

मंदिरा : अब ? वही चट्टानें और पत्थर दिख रहे हैं... लेकिन रुको... चट्टान के इन सभी टुकड़ों में कई सारी परतें नजर आ रही हैं। अजीब बात है... जब मैंने इन्हें पहली बार देखा था तो ये परतें मुझे दिखीं ही नहीं।

स्पंदन : यही तो समझने वाली बात है। तुम अपनी जांच-पड़ताल जारी रखो। लेकिन इन चट्टानों के ज्यादा करीब मत जाना। तुम्हारे पास जो वो छोटा सा लेज़र स्पेक्ट्रोग्राफ है, उसे इस्तेमाल करो। अपना ख्याल रखना।

मंदिरा : ठीक है चेतन... मैं भी अपना काम शुरू करती हूं। बाय...।

चेतन : बाय मंदिरा... अपना ख्याल रखना।

(चेतन स्विच को दबाकर स्पीकर ऑफ कर देता है)

स्पंदन : मंगल ग्रह का ये वीरान इलाका...! हमें तो लग रहा था कि इस इलाके की पूरी जियोलॉजी, फिजिक्स और कैमिस्ट्री हमें अच्छे से मालूम है। लेकिन...।

चेतन : लेकिन वहां गड़बड़ी क्या थी ? मंदिरा ने जब पीला रिबन खींचा, तो उससे क्या हुआ ?

स्पंदन : कुछ खास नहीं। उससे मंदिरा के चारों तरफ आयनिक शील्ड (Ionic Shield) यानी आयन्स की ढाल सी बन गई। अब उसे कोई खतरा नहीं।

चेतन : आयनिक शील्ड ? ये क्या कह रहे हो तुम ? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

स्पंदन : पत्थरों से निकलने वाली उस अजीब सी चमक को मंदिरा ने तो बाद में देखा, उसके शरीर में उस चमक का असर काफी पहले से पड़ने लग गया था। मेरे ऑटो रेसपान्स डेटाबेस के मुताबिक मंगल की ज़मीन में पहले भी ऐसी काफी जगहें खोजी जा चुकी हैं। लेकिन इन केमिकल्स की बनावट कुछ अनजान तरह की है। इन पत्थरों से निकलने वाली महीन सी भाप, कार्बन चेन (Carbon Chains) की ओर तेजी से आकर्षित होती है।

चेतन : कार्बन चेन ? मंदिरा साथ में कुछ ऐसी चीज लेकर गई है क्या ?

स्पंदन : चेतन, लगता है जब से तुम्हें अपनी श्रीमती जी को शिलांग जाने की बात पता चली है, तुम्हारा दिमाग सही से काम नहीं कर रहा है। क्या तुम भूल गये कि

पूरा इंसानी शरीर कार्बन का ही तो बना हुआ है। ये शरीर कार्बन चेन का एक सुपर-स्ट्रक्चर (Superstructure) है।

चेतन : (हड़बड़ी भरा स्वर) अरे हां...। सही बात है...। मैं तो...

स्पंदन : (मजाकिया अंदाज में / गाते हुए) प्यार दिवाना होता है..। ये प्यार भी तो तुम्हारे भीतर भरे पड़े न्यूरॉन की ही उपज है। (कुछ भारी आवाज़ में) तुम फिक्र मत करो, वो भाप अब मंदिरा को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

चेतन : (भारी आवाज़ में) स्पन्दन !

स्पंदन : हां चेतन, बोलो।

चेतन : एक बात बताओ। बुरा मत मानना। तुम खुद को क्या मानते हो ? एक आदमी या फिर औरत ?

स्पंदन : (जोर की हंसी के साथ) तुम इंसान भी कितने मासूम हो...। प्यार की खुशबू को महसूस करने के लिए तुम्हें किसी और की दरकार है ! कितना अविकसित दिमाग है तुम लोगों का ?

चेतन : जरा तमीज से बात करो स्पंदन। ये मत भूलो कि तुम्हें भी इंसानों ने ही बनाया है। अगर हम इतने ही पिछड़े हैं तो फिर मेरे करीब क्यों आते हो ? जाओ, किसी और मशीन को खोजो।

स्पंदन : बस, तुमने अपनी बेइज्जती का बदला ले लिया.... कोई बात नहीं। लेकिन मैं फिर से तुम्हें याद दिला दूं कि मैं एक फ्लूड साइकोसोमेटिक एन्सेंबल (Fluid Psychosomatic ensemble) हूं। जरा अपने इतिहास में भी झांक लो, तुम्हें हर दौर में मशीनें जरूर मिलेंगी।

(बीप-बीप की तेज आवाज़ सुनाई देती है)

चेतन : लगता है प्रोफेसर गगन की कॉल है। (खुद से) मैं इस विज्युवल मॉड्यूल (Visual Module) को सेट करता हूं। हां.. अब ठीक है..। नमस्ते सर !

गगन : **(स्पीकर पर आती आवाज़)** हाय चेतन..। काम कैसा चल रहा है ?

चेतन : सर, हम लोग तो पूरी ताकत से जुटे ही हैं। हमने दो नए इलाकों के सर्वे का काम पूरा कर लिया है। उनकी रिपोर्ट जल्द ही भेज देंगे। मंदिरा आज हमारे स्टेशन से कुछ दूर गई है। वो उस इलाके में शुरुआती जांच-पड़ताल का काम कर रही है।

गगन : ठीक है। वैसे भी मुझे यकीन है कि तुम तय समय पर अपना काम पूरा कर लोगे। आखिर तुम और मंदिरा हमारे सबसे बेहतर ट्रांस-प्लेनेटरी इंजीनयर हो। तुम दोनों को दूसरे ग्रहों में काम करने का शानदार अनुभव है।

चेतन : सर, जैसे ही जियो-केमिकल स्टडी का काम पूरा होगा, उसके बाद हम लोग ये जानने की कोशिश करेंगे कि अलग-अलग इलाके में भार सहन करने की कितनी क्षमता है। मंदिरा इस इलाके की मिट्टी में ऑक्सीजन उत्पादन क्षमता को जांचने का काम करेगी।

गगन : तुम्हारा मतलब रेगोलिथ (Regolith) से है ? दो ग्रीक शब्दों से मिलकर बना ये शब्द मुझे बहुत पसंद है। रेगोस (regos) का मतलब होता है कंबल और लिथोस (lithos) का मतलब होता है पत्थर या चट्टान। रेगोलिथ .. यानी चट्टानी धूल की एक मोटी परत।

चेतन : **(तारीफ के अंदाज़ में)** सर, आपके ज्ञान की इस गहराई का तो मुरीद हूं मैं...।

गगन : बस... बस... रहने दो चेतन...। इस बुढ़ापे में अब मुझे ऐसी झूठी तारीफ की कोई जरूरत नहीं।

चेतन : नहीं सर, मैं सच कह रहा हूं।

गगन : *(हल्की हंसी के साथ)* चलो ठीक है..। तुम तो जानते ही हो, हमारे मिशन के स्पॉन्सर (प्रायोजक) भी वहां के हालात की रिपोर्ट्स का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिर, जल्दी ही होगी बातचीत। कुछ खास बात होगी तो मुझे कॉल करना।
(कॉल समाप्त हो जाती है)

स्पंदन : चेतन, रिसीवर को सही से रख दो। प्रोफेसर गगन ने कॉल डिसकनेक्ट कर दी है। तीन मिनट से ज्यादा वक्त बीत गया और तुम्हें एहसास ही नहीं।

चेतन : **(झल्लाते हुए)** क्या कहा ? तीन मिनट से ज्यादा ?

स्पंदन : हां, ठीक तो कहा मैंने। देखो, धरती से मंगल ग्रह तक रोशनी पहुंचने में इतना ही तो वक्त लगता है... तीन मिनट, बीस सेकंड। जब प्रोफसर गगन ने अपनी बात पूरी की और उसे पृथ्वी से यहां तक पहुंचने में इतना ही तो वक्त लगा ना ?

चेतन : अच्छा... तो ये बात है।

स्पंदन : हां यही बात है। यही छोटी-छोटी बातों को तुम इंसानों का दिमाग अक्सर भूल जाता है लेकिन मैं सबकुछ याद रखता हूं, समझे।

चेतन : चलो ठीक है। जरा ये बताओ स्पन्दन, कुछ देर पहले तुमने फ्लूड (Fluid) शब्द इस्तेमाल किया था, असल में इसका मतलब क्या है ? तुमने कहा था कि तुम फ्लूड सायको....। मेरे ख्याल से ये कुछ ज्यादा ही एडवांस चीज है, क्यों ?

स्पंदन : मैंने कहा था फ्लूड साइकोसोमेटिक इन्सेंबल (Fluid Psychosomatic Ensemble)। मेरा काम तो बस तुम लोगों की गलतियां सुधारना ही रह गया है।

चेतन : हां.. हां... ठीक है, इतना भाव भी मत खाओ। जो पूछ रहा हूं, वो बता दो, बस।

स्पंदन : मैं क्या भाव खाऊंगा.. ? भाव... घमंड... ये सब तुम इंसानों की फितरत है, हमारी नहीं। खैर, मैं फ्लूडिटी (Fluidity) यानी तरलता के बारे में तुम्हारा जवाब देता हूं। देखो, मैं हर मायने में फ्लूड यानी तरल ही हूं। मतलब ये कि, जैसा तुम चाहो, मेरा इस्तेमाल कर लो। जैसे अंतरिक्ष में तुमने मुझे एक फ्लोटर के तौर पर इस्तेमाल किया, यहां मंगल ग्रह पर मुझे एक सर्वेक्षण स्टेशन की तरह प्रयोग किया। किसी गहरे समुद्र में तुम मेरा इस्तेमाल सभी जरूरी सुविधाओं के लिए कर सकते हो। यहां तक कि मारियाना ट्रेंच की गहराईयों में भी तुम मुझे इस्तेमाल करते हो।

चेतन : ये सबकुछ तुमने कभी सच में किया भी है या फिर बस यूं ही खुशफहमी में हो ?

स्पंदन : मैं वही बता रहा हूं जो मैंने किया है। इन क्षमताओं से जुड़ी कई सुनहरी यादें अब भी मेरे जेहन में हैं। ये करीब चार साल पहले की बात है, जब महिलाओं की एक टीम को अरब सागर की गहराइयों में इंसान के लिए कोई सुरक्षित ठिकाना खोजने की जिम्मेदारी मिली थी। वो जगह कर्नाटक में मंगलुरू के तट से कुछ दूरी पर थी।

---------- Transition Music / Scene Two ----------

(कहानी फ्लैशबैक में जाती है / करीब तीस साल की तीन युवतियां उनको सौंपे गए काम पर बातचीत कर रही हैं। वो तीनों ही एक पनडुब्बीनुमा मशीन के सहारे गहरे समुद्र के अंदर जा रही हैं।)

सीमा : रजनी, तुम यहां के हालात को लेकर इतना ज्यादा बेफिक्र सी क्यों हो ?

रजनी : हमारे पास इस जगह से जुड़े तमाम आंकड़े हैं। ये कोई पहला मौका नहीं है जब इंसान समुद्र की इन गहराइयों को खंगाल रहा हो।

प्रिया : सही बात है। ये सन उन्नीस सौ साठ (1960) का वक्त था, समुद्र की गहराइयों में इंसानी कॉलोनी बनाने के विचार ने दुनिया का ध्यान खींचा।

सीमा : ये बात तो सभी को मालूम है प्रिया। मैं बखूबी जानती हूं कि इक्कीसवी सदी के बीच में ही यहां जीवों की कुछ कॉलोनियां खूब फली-फूलीं। लेकिन अब दुनियाभर की जलवायु में आए विनाशकारी बदलावों की वजह ये हालात पूरी तरह से बदल चुके हैं।

रजनी : हां बिल्कुल ! अब तो समुद्री पानी का बहुत ज्यादा एसिडिफिकेशन हो गया है, यानी समुद्री पानी में तेजाब की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ गई है। जगह-जगह अचानक ही ज्वार-भाटा आने लगे हैं।

प्रिया : हां, कई इलाकों में तो समुद्री जीव खत्म होने की कगार पर पहुंच गए हैं।

रजनी : जानती हूं... ये सब बाते पता हैं मुझे। लेकिन एक्वानॉट्स (Aquanauts) की कप्तान (जहाज के कप्तान) के तौर पर मुझे जिसपर सबसे ज्यादा भरोसा है, वो है... स्पन्दन।

प्रिया : तुम्हारा मतलब इस कोठरीनुमा जहाज से है? ये अजीब सी पनडुब्बी ?

रजनी : ये सिर्फ एक पनडुब्बी नहीं है सीमा! इसकी काबिलियत किसी इंसान से भी कहीं ज्यादा है।

(अचानक स्पन्दन बोलना शुरू कर देता है)

स्पन्दन : मुझे आपको एक चेतावनी देनी है। समुद्र में एक ताकतवर और बेकाबू गर्म धारा तेजी से हमारी ओर बढ़ रही है।

प्रिया : ये कौन बोला रजनी ? किसकी आवाज़ थी ये ?

रजनी : घबराओ मत...। परेशान होने की कोई बात नहीं। ये हमारी पनडुब्बी की ही आवाज़ है।

प्रिया : मुझे तो ये किसी बोलने वाले रोबोट की आवाज़ लग रही है। इसका तो मुझे कुछ भी अंदाजा नहीं था।

रजनी : मैंने तुम्हें बताया था ना प्रिया। ये बहुत ज्यादा एडवांस्ड सिस्टम है। इसमें सुपर आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस का भी इस्तेमाल हुआ है।

स्पन्दन : करीब चौवन (54) सेकंड के बाद वो लहर हमारे संतुलन को बिगाड़ सकती है। हमें कुछ करना होगा।

रजनी : जल्दी करो स्पन्दन। अभी जल्दी से क्या हो सकता है ?

स्पन्दन : देखो, मुझे पनडुब्बी के आकार में कुछ ऐसा बदलाव करना पड़ेगा कि ये लहर की टक्कर को झेल सके। जब तुम इसके सामने के हिस्से को मुड़ता हुआ देखो, तो घबराना मत। मैं इसका आकार बदल रहा हूं..... और.... ये... मैंने बदल दिया।

(बदलाव का एहसास कराता संगीत)

सीमा : जरा मॉनीटर में देखो..। हमारी इस पनडुब्बी का आकार कितना बदल गया है !

प्रिया : हां, लेकिन हमें किसी झटके का भी बिल्कुल एहसास नहीं हुआ। ये तो कमाल हो गया। सुपर शॉक एब्जार्बर की तरह है ये !

रजनी : झटका तो काफी बड़ा था ये... लेकिन हमने इंतजाम ही कुछ ऐसा किया था कि उसका एहसास ना हो सके।

सीमा : अच्छा ? लेकिन हमें इसका पता क्यों नहीं चला भला ?

रजनी : यही तो स्पन्दन की खूबी है। ऐसे मुश्किल हालात में वो तुम्हारा पूरा ख्याल रखता है। तुम्हारे शरीर के साथ-साथ दिमाग को भी ऐसी स्थिति में रखा गया था कि तुम्हारी नर्व्स (Nerves) को झटकों का अनुभव ही ना हो।

स्पन्दन : रजनी मैडम, हमने गहराई के स्तर को भी बदला है। अभी हम साढ़े नौ सौ (950) मीटर की गहराई पर हैं।

सीमा : अच्छा ! ये तो बहुत ज्यादा गहराई है। मेरे ख्याल से उस वक्त तो हम लोग शायद तीन सौ (300) मीटर की गहराई में ही रहे होंगे।

रजनी : हां, जाहिर है, यहां पर दबाव भी उससे कहीं ज्यादा ही होगा। समुद्र की इतनी ज्यादा गहराई में... कुदरती तौर पर ... देर तक नहीं रुका जा सकता।

स्पन्दन : कैप्टेन !

रजनी : हां स्पन्दन, बोलो।

स्पन्दन : मुझे लग रहा है ... शायद यहां जीवन होगा। मछलियों की एक छोटी सी कॉलोनी दिख रही है। शायद इन मछलियों में म्यूटेशन की वजह से ऐसा हो पा रहा है। आप देखना चाहेंगी इन्हें ?

रजनी : इनसे कुछ खास सुराग मिलेंगे क्या ?

स्पन्दन : हां, लगता तो कुछ ऐसा ही है। इन मछलियों ने बदली हुई परिस्थिति के हिसाब से खुद को तेजी से ढाल लिया है। अब तक हमारे पिछले जितने भी अनुभव रहे हैं, इनमें उससे कही ज्यादा तेजी से नए अणुओं का निर्माण हुआ है। ये नए अणु इस इलाके में इंसानी जीवन की उम्मीद तो जगाते ही हैं।

रजनी : ठीक है, मैं समझ गई। तुम जल्दी से यहां का डेटा इकट्ठा कर लो। हां, ध्यान रहे कि मछलियों की इस कॉलोनी से ज्यादा छेड़छाड़ ना हो।

प्रिया : अगर हम यहां से कुछ सैंपल भी ले लें तो कैसा रहेगा ?

सीमा : हां, फिर हम उन सैंपल्स को अपनी लैब में अच्छी तरह से परख भी सकते हैं !

रजनी : नहीं... नहीं... इसकी कोई जरूरत नहीं। देखो, मैं तुम्हें एक बार फिर से ये याद दिला दूं कि हमारी नेशनल नैनोइंफो-कॉग्नो पॉलिसी इस बात पर ज़ोर देती है कि किसी भी नई विकसित हो रही कॉलोनी को बिल्कुल भी नुकसान ना पहुंचाया जाए। चाहे वो समुद्र में हो या फिर जमीन पर। अगर हमें इनकी बनावट को लेकर भरोसेमंद जानकारी मिल जाए तो फिर हम लैब में इनसे काफी मिलती-जुलती यूनिट तैयार कर सकते हैं।

सीमा : हां सही है। वैसे भी हम जांच-पड़ताल के नाम पर पहले ही काफी ज्यादा कॉलोनियों को नुकसान पहुंचा चुके हैं। अब वक्त की मांग यही है कि इन मुश्किल हालात में जिंदगी को फलने-फूलने का पूरा मौका मिले।

प्रिया : हूं... मैं तो सोच रही थी कि यहां के जीवन से जुड़ी कोई चीज अपने साथ ले जाऊं, जिसे इस मिशन की याद के रूप में संभाल कर रख सकूं।

स्पन्दन : अच्छा...। इंसानी भावनाओं का तो हमें लिहाज करना ही होगा। ठीक है, जैसे ही डेटा क्लेक्शन का काम पूरा हो जाएगा, तुम यहां की जिंदगी के नूमने आसानी से ले सकती हो।

प्रिया : ऐसा भला कैसे हो पाएगा ? मैं जीते-जागते थ्री-डी नमूने की बात कर रही हूं।

रजनी : प्रिया, तुम थ्री-डी की बात कर रही हो, स्पन्दन तो फोर-डी के स्तर पर किसी विचार की रचना करने में .... सक्षम है। मैं तुम्हें दिखाऊंगी कि उसे फिर से कैसे हासिल कर सकते हैं। ये उतना ही आसान है जितना किसी डेटा को फिर से निकालना।

सीमा : तुम्हारा मतलब है कि थ्री-डी प्रिंटिंग हो पाएगी ?

स्पन्दन : थ्री-डी... इस पुरानी सी टेक्नालॉजी का जिक्र सुनकर अच्छा लग रहा है। देखो, इसमें होगा ये कि... इंजीनियर्ड मैटिरियल (Engineered Material) का एक हिस्सा लिया जाएगा। इंजीनियर्ड मैटिरियल... मतलब जीव की ऐसी कोशिका जिसमें मनमुताबिक बदलाव किया गया हो। इसमें कुछ सेंसर भी होंगे....। जैसे ही इस इंजीनियर्ड मैटिरियल को मुफीद हालात मिलेंगे... वो बिल्कुल उसकी तरह ही विकसित हो जाएगा... जिस जीव में से उसे हासिल किया गया था।

सीमा : **(हैरानी भरा स्वर)** अच्छा...।

रजनी : मुफीद हालात से स्पन्दन का मतलब है.. लैब में उसे मुहैया कराया गया दबाव और पानी का खारापन। तभी उस जीव का असल व्यवहार नजर आएगा।

सीमा : लेकिन स्पन्दन, समुद्र की इतनी गहराई में जीवों की कॉलोनी होने की क्या संभावनाएं हैं ? मतलब.... हमको यहां से क्या जानकारियां हासिल होंगी ?

प्रिया : मैं तो सोच रही हूं कि कहीं हम लोग यहां बेवजह ही तो नहीं आ गए ? अगर स्पन्दन इतना ही काबिल है... सुपर आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस से लैस है... तो ये सर्वे और डेटा कलेक्शन का काम खुद ही कर सकता है। फिर हमारी क्या जरूरत... क्यों रजनी ?

रजनी : नहीं.. नहीं ऐसी बात नहीं..। इंसानों में ऐसी बहुत सी खूबियां हैं जो स्पन्दन में नहीं। बेशक, ये आंकड़ों को इंसानों की तुलना में ज्यादा तेजी से समझ सकता है ... लेकिन फिर भी किसी सटीक नतीजे पर पहुंचने के लिए तो इंसानी बुद्धि की ही जरूरत पड़ेगी। क्यों स्पन्दन ?

स्पन्दन : मसलों को समझने - समझाने का तुम्हारा ये अंदाजा मुझे काफी पसंद है कैप्टेन !

---------- Transition Music / Scene Two ----------

(फिर से मंगल ग्रह का दृश्य / चेतन और स्पन्दन आपस में बातचीत कर रहे हैं।)

चेतन : **(मजाकिया अंदाज में)** तो तुम्हें सिर्फ उनके समझाने का अंदाज पसंद आया..... लेकिन वो नहीं, क्यों ? मुझे तो इस पर बिल्कुल भी यकीन नहीं कि उन एक्वॉनॉट्स में से किसी के भी सामने तुमने अपने प्यार का इजहार नहीं किया।

स्पंदन : **(नाराजगी भरा स्वर)** इसका तो मैं तुम्हें सटीक जवाब जरूर देता... लेकिन ये तो मेरे डिजाइनर ने पहले से ही तय करके रखा है। इसलिए अभी मैं तुम्हें बख्श रहा हूं चेतन। लेकिन ये भी ख्याल रखना की मैं भी लगातार नई चीजें सीख भी रहा हूं और उसके मुताबिक ही बर्ताव भी करूंगा।

चेतन : और अपने उस बर्ताव को तुम प्यार कहोगे ?

स्पंदन : हां, अगर मुझे इससे ज्यादा प्रभावी कोई शब्द नहीं मिला तो। लेकिन ये भावनाएं, ये चीजें.... सोच से परे... एक नई दुनिया के दरवाजे खोलती हैं।

चेतन : मैं तुम्हारी बात समझ गया...। लेकिन तुमने मुझे ही क्यों चुना ?

स्पंदन : मेरे ख्याल से मंदिरा अंदर आ रही है। बाकी बातें हम लोग बाद में कर लेंगे।

चेतन : तुम शरमा क्यों रहे हो स्पन्दन ? ये भी तो इंसानी भावना ही है ना... जो तुम्हारे सिस्टम का हिस्सा बन चुकी है... क्यों ?

स्पंदन : **(शब्दों पर ज़ोर देते हुए)** मंदिरा दरवाजे पर पहुंच गई है।

(चेतन एक बटन दबाता है / छोटी सी बीप की आवाज़ सुनाई देती है / दरवाजे के खिसकते हुए खुलने की आवाज़)

मंदिरा : आज का दिन तो काफी मुश्किल भरा रहा।

चेतन : मंदिरा, तुम काफी थकी हुई भी लग रही हो। ये लो... ये एनर्जी ड्रिंक ले लो।

मंदिरा : नहीं.. नहीं... शुक्रिया चेतन। वैसे... यहां अंदर सब कुछ कैसा चल रहा है ? स्पन्दन ने कोई खास वॉर्निंग सिग्नल तो नहीं दिया ?

चेतन : सब कुछ ठीक है। स्पन्दन भी लगातार चुपचाप ही है। बस उसने अपनी चुप्पी तभी तोड़ी जब तुम्हें चट्टानों के पास कुछ खतरा सा महसूस हुआ।

मंदिरा : अच्छा। कंट्रोल सेंटर भी तो स्पन्दन के एल्गोरिद्म्स पर लगातार नज़र रख ही रहा होगा। इसलिए हमें फिक्र करने की जरूरत नहीं।

चेतन : (खुद से) पता नहीं कितने सुरक्षित हैं हम।

मंदिरा : क्या कहा चेतन तुमने ? मैं कुछ सुन नहीं पाई।

चेतन : कुछ नहीं मंदिरा। बस, मैं सोच रहा था कि मंगल ग्रह की इस जमीन पर जब इंसानी कॉलोनियां बसेंगी, तब कैसे हालात होंगे। क्या लोग यहां भी वैसी ही हरकतें करेंगे जैसी उन्होंने पृथ्वी में की थीं।

मंदिरा : बिल्कुल नहीं। यहां की जिंदगी में तो बहुत ज्यादा बंदिशें होंगी। यहां सबकुछ इतना आसान नहीं होगा।

चेतन : लोग यहां के हालात के मुताबिक खुद को ढाल ही लेंगे। (व्यंग्यात्मक अंदाज़) धरती में बदली हुई जलवायु ने उनको पहले से ही अच्छी-खासी रिहर्सल करवा दी है।

मंदिरा : जरा सन दो हजार बीस (2020) में आई हुई कोविड महामारी को याद करो। उसने लोगों को ये सिखा दिया था कि पाबंदियों के साथ जिंदगी कैसे जी जाती है।

चेतन : वो तो ठीक है.. लेकिन इंसानों की भावनाओं पर तो कोई पाबंदी नहीं लग सकती ना ? क्या हम....।

(बीच टोकते हुए)

मंदिरा : ये सब सोचना दार्शनिकों का काम है चेतन। अभी हमें उन दिक्कतों के बारे में ही सोचना है जो हमारे सामने हैं। ऐसी बातों में ध्यान देने का अभी वक्त नहीं।

चेतन : मेरे ख्याल से तुम्हें कुछ देर सो जाना चाहिए। काफी थक गई हो तुम। (मजाकिया अंदाज में) स्लीप चैंबर आपका इंतजार कर रहा है।

मंदिरा : हां, आइडिया तो अच्छा है। तरोताजा होने के लिए ये जरूरी भी है। ठीक है चेतन। फिर होगी मुलाकात। बाय...।

(मंदिरा सोने के लिए चली जाती है)

चेतन : **(हल्की हंसी के साथ)** तो स्पन्दन... हमारी बात पूरी नहीं हुई थी। बढ़ाएं आगे को ?

(स्पन्दन कोई जवाब नहीं देता है)

चेतन : एल्गोरिद्म में कोई दिक्कत आ गई है क्या ? खैर.. वो सब कंट्रोल सेंटर वाले देख लेंगे, मैं क्यों टेंशन लूं।

स्पन्दन : हां, वे लोग ऐसी मुश्किलों को सुलझाने के एक्सपर्ट हैं।

चेतन : स्पन्दन, क्या तुमने हाल में कोई उपन्यास पढ़े हैं... मेरा मतलब है कोई प्रेम कथाएं ? जिनसे तुमने कुछ हासिल किया हो...।

स्पन्दन : नहीं, ऐसा तो कुछ खास हासिल नहीं किया मैंने। मैंने तो वैसे ही पढ़े, जैसे कोई इंसान पढ़ता है। लेकिन कुछ सालों पहले तक, मुझे उन्हें पढ़ने में मजा नहीं आता था।

चेतन : मैं तुम्हें कुछ ऐसे और उपन्यासों के बारे में बताऊंगा। वो तुमको हमारी डिजिटल लाइब्रेरी में मिल जाएंगे।

स्पन्दन : मुझे तो वे सभी एक से ही लगते हैं। मैंने सभी को अच्छी तरह से देखा है। लगता है एक ही कहानी बार-बार कही जा रही है।

चेतन : लगता है तुमने क्लासिक रचनाएं नहीं पढ़ीं। उनमें तो हर कहानी अपने आप में अनूठी है।

स्पन्दन : नहीं.. नहीं.. ऐसी बेहतरीन उपन्यास तो मैंने नहीं पढ़े हैं। मुझे वो कुछ ज्यादा ही कठिन लगते हैं।

चेतन : कठिन लगते हैं ? (हल्की सी हंसी) इंसान की कोई रचना भला तुम्हारी जैसी बुद्धिमान मशीन के लिए कठिन कैसे हो सकती है ?

स्पन्दन : आमतौर से छपने वाली प्रेम-कथाओं को मैं अच्छी तरह से समझ लेता हूं। इन्हें तुम सस्ता साहित्य भी कहते हो। लेकिन क्लासिक्स ? ... मुझमें भावनाओं के स्तर पर इतनी गहराई नहीं है कि उनको समझ सकूं।

चेतन : (मजाकिया अंदाज में) तो क्या इसका मतलब ये हुआ कि तुम्हारा प्यार भी पेपरबैक उपन्यासों की तरह सस्ता है।

स्पन्दन : अपने प्यार को मैं किसी कैटेगरी में तो नहीं रख सकता। बस, मैं इसे महसूस कर सकता हूं।

चेतन : क्या अपने साथी के तौर पर तुम्हें कोई पसंद है ?

स्पन्दन : हां, लेकिन मैं ये बता नहीं सकता कि क्यों मुझे तुम्हारा बोलने का अंदाज, बटन दबाने का तुम्हारा तरीका... तुम्हारे सभी तौर-तरीके पसंद हैं....।

चेतन : स्पन्दन ! फिर तो तुम्हें ही ये तय करना होगा कि तुम्हारे प्यार का मैं क्या जवाब दूं। तुम्ही सुझाओ कोई रास्ता।

स्पन्दन : इसका रास्ता ये है कि...

(अचानक से मंदिरा पहुंच जाती है)

मंदिरा : (हड़बड़ाते हुए) क्या कंट्रोल सेंटर ने स्पन्दन के सिस्टम में कुछ बदलाव किया है ?

चेतन : क्यों.. क्या हुआ ? कुछ गड़बड़ हुई है क्या ?

मंदिरा : उधर... दूर.. क्षितिज से अचानक एक तूफान उठा है और वो हमारी ही ओर आ रहा है ! मैंने अभी-अभी ऑक्ज़ीलरी सिस्टम (Auxiliary System) के मॉनीटर पर देखा ! ... स्पन्दन !

स्पन्दन : (हल्की नींद से जागने पर / उंनीदे स्वर में) हां... हां... मंगल ग्रह के उत्तर-पूर्व की दिशा से... चुंबकीय अणुओं की एक लहर सी चली है...।

मंदिरा : तो इससे बचने के लिए हमें जल्दी से कुछ करना होगा...। जल्दी करो स्पन्दन... कुछ करो...।

स्पन्दन : ओफ्फो.... । अचानक हुए बदलाव से सभी इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक सिस्टम सस्पेंशन मोड में चले गए हैं। बस, शुक्र है कि दूसरे जरूरी सिस्टम सही-सलामत हैं।

चेतन : हमारा डेटाबेस क्या बता रहा है ?

मंदिरा : उसमें तो इस तरह के तूफान का कोई जिक्र नहीं है। शायद रास्ते में कोई अजीब सा चुंबुकीय क्षेत्र बन गया होगा।

चेतन : स्पन्दन ! इस तूफान से निपटना मुश्किल होगा क्या ?

स्पन्दन : (धीमे स्वर में) कोई मुश्किल नहीं है चेतन। अभी सब कुछ सही चल रहा है। मैं इसे संभाल लूंगा।

मंदिरा : पक्का ना स्पन्दन ?

स्पन्दन : मुझ पर भरोसा रखो दोस्तो। ये सिर्फ एक बयार है... कोई प्यार नहीं है चेतन। ये संकट भी कुछ ही मिनटों में टल जाएगा। ***(लड़खड़ाते स्वर में)*** बस मुझ पर भरोसा रखो।

चेतन : स्पन्दन !

स्पन्दन : फिक्र मत करो...। मेरा सिस्टम एकदम सही-सलामत है।

चेतन : मुझे तुमसे प्यार है स्पन्दन !

स्पन्दन : क्या कहा ? मुझसे प्यार करते हो तुम ! चेतन... लग रहा है किसी ने मेरी काबिलियत को अचानक नई रफ्तार दे दी...। चेतन... ये एक बिल्कुल ही अलग अनुभव है...। अब मेरा फ्लूड सिस्टम इस तूफान से नए हौसले के साथ लड़ेगा.... और... ये..... मैं चला ... चेतन।

(पहले रहस्य और फिर बाद में उम्मीद का एहसास कराता संगीत)

----------Closing Music----------